ब्रह्मा बाबा में कुछ नया करने, वस्तु-स्थिति व विषय को स्पष्ट, सरल और सटीक करने की उछल सदा बनी रही। बाबा विषय को ऐसे स्पष्ट करते थे कि उस विषय को लेकर किसी भी जिज्ञासु की जिज्ञासा और बढ़ जाये। बाबा कोई भी विषय स्पष्टीकरण ऐसा करवाते थे जिसके अन्दर समय के अनुसार ज्ञान, धारणा का मर्म समाया हो। बाबा का चिंतन बहुत उम्दा और उत्साह देने वाला होता। हर बात को नये ढंग से, नये रूप से, नये आयाम को स्पष्ट करने वाला होता।

स्पष्ट और श्रेष्ठ ज्ञान के माध्यम ब्रह्मा बाबा

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

बाबा ज्ञान-बिन्दुओं को जिस रीति से स्पष्ट करते, वह रीति भी विचित्र थी और सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाली होती थी। वे ईश्वरीय ज्ञान के किसी भी सिद्धान्त को सूक्ष्मता की सीमा तक ले जाते। उदाहरण के तौर पर, साहित्य-लेखन के कार्य में लगे होने के कारण मैं जब कभी उनके पास कोई लिखित निबंध अथवा लेख ले जाता तो उसमें शब्दों के साथ वे कई विशेषण जोड़ देते, उदाहरण के लिए जैसे व्यक्ति को ज्ञान ही नहीं देना, विशेष ज्ञान देना है।

बाबा लेखन को स्पष्ट और विशेषण युक्त बनवाते

एक बार की बात है कि जो लिखित सामग्री मैं बाबा के पास ले गया, उसमें वर्तमान सृष्टि को कलियुगी सृष्टि कहा गया था जो कि ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार ठीक ही था। बाबा ने कहा कि कलियुगी शब्द से पहले 'धर्म-ग्लानि युक्त', 'सत्यता-रहित' शब्द जोड़ो। जब मैं ये विशेषण जोड़कर तथा अन्य संशोधन करके बाबा के पास लेख को पुनः ले गया, तब बाबा ने कहा कि इसमें कुछ और विशेषण जोड़ने चाहिए और तीसरी बार कुछ और विशेषण जोड़ने को कहा। अंत में कलियुगी शब्द से पहले 'तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी, पतित, आसुरी, मर्यादाहीन, हिंसा-प्रधान' आदि-आदि शब्द भी जुड़े हुए थे। इसके बाद भी बाबा ने कहा कि '100 प्रतिशत और दिवालिया' शब्द इसमें और जोड़ दो।

सुभाषित में समय का मर्म समाया हो

इसी प्रकार एक बार जब यह सुभाषित(सुवाक्य) लिखा गया कि "पवित्रता, सुख और शांति आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है" तब बाबा ने कहा कि इससे पहले '100 प्रतिशत या सम्पूर्ण' शब्द जोड़ो और यह लिखो कि "21 जन्मों के लिए" जन्मसिद्ध अधिकार है। यह लिखने के बाद फिर बाबा ने कहा कि अब प्रश्न उठता है कि ईश्वरीय जन्म कब होता है और यह अधिकार कब मिलता है? यह बात समझाते हुए उन्होंने इस सुवाक्य में "अब नहीं तो कब नहीं" शब्द जोड़ने का निर्देश दिया।

भाषण कर्ता की वाणी में जौहर हो

ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के ये प्रयत्न बाबा केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग-युक्त होनी चाहिए। इसे वे यूं समझाते कि जैसे तलवार में जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग-युक्त स्थिति ज्ञान रूपी तलवार का जौहर है।

ऐसा नुक्ता दो जो ज्ञान समझ में आ जाये और धारण भी कर सके

दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन-कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फाँसी की सज़ा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी-ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग-विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था, अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करे। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वो जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जायेगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है, उसे मृत्युदण्ड भी भोगना पड़े। गोया वकील की छोटी-सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय-विकारों में गोता लगाए दुःख-दण्ड के भागी बनते रहते हैं।

ज्ञान के साथ, ज्ञान देने का तरीका भी उत्तम और व्यवहारिक हो

तीसरा, वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ-साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को उबलते हुए पानी में डाल कर कीटाणु-रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते- दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए, तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस तरह बाबा में मैंने हमेशा नये-नये उमंग-उत्साह का संचार देखा।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

वायब्रेशन्स भी मन की शक्ति का कमाल है

हर दिन का एक संकल्प हमारा, उस बिन्दु(बूंद) की तरह ही है जो पानी में पड़ता है, पर मिक्स होने के कारण दिखाई नहीं देता है। यह काम लेकिन वही करता है। बूंद-बूंद से सागर बनता है ना, ऐसे ही संकल्प की बूंद भी हर वायब्रेशन्स का आधार है।

एक मानव की कहानी ही है कि जिसने अपने संकल्पों से पूरे माउण्ट आबू के वायब्रेशन्स को ही बदल दिया। आज वहाँ पर पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। सभी एक तीर्थ स्थान के रूप में माउण्ट आबू आते-जाते हैं। लेकिन पर्यटकों को घुमाने वाले गाइड सबसे पहले उन स्थानों पर ले जाते हैं, जहाँ पर आदि पिताश्री, प्रजापिता ब्रह्मा ने लगभग 33 वर्षों तक तपस्या की। क्या वायब्रेशन्स हैं वहाँ के! अकेले थे, संकल्प के बारे में पता था, जैसा सोचेंगे वैसा ही होगा। बस होना क्या था, शुरू किया तप और परमात्मा की शक्ति से पूरे माउण्ट आबू के वायब्रेशन्स ही बदल डाले। क्या था, बस यहीअभ्यास था। सभी दुःखी मानव जाति के प्रति, सुख व शांति का। अब यह सुख व शांति का संकल्प ब्रह्मा बाबा कर रहे थे।

आज जो वहाँ पांव भी रखता है तो उसे यह अनुभव होने लगता है कि यहाँ कुछ तो है जो हमें रोकता है। यह है बूंद-बूंद का संकल्प जो बाप ने किया। हमें भी जब कभी वहां जाने का मौका मिलता है तो हम उस वायब्रेशन्स में जाकर कुछ ऐसे ही संकल्पों का सहयोग देते हैं। यह सहयोग देना बल्कि लेना है कि उसी वक्त से हम भी अच्छे-अच्छे संकल्प करते हैं। और वो फलीभूत होता ही है। आप भी अपने घर में बैठकर, छोटे-छोटे सुखदायी संकल्प कर अपने आस-पास का वातावरण ऐसा सुन्दर बना सकते हैं। जो चाहे, जैसा चाहे वो प्राप्त कर सकते हैं। हमें तो बड़ा ही गर्व होता है कि ऐसे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने, इतनी हज़ारों आत्माओं को अपने संकल्पों के बल से नव जीवन देने के निमित्त बने। और आज आलम यह है कि वहाँ पर बैठने की जगह नहीं होती है।

हर वक्त उस वायब्रेशन्स में आने वाले का तांता लगा होता है। ऐसे हम भी चाहें तो अपने आस-पास अलौकिक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। अब हमारा संकल्प यह होना चाहिए 18 जनवरी, 2020 तक हर दिन छोटे-छोटे श्रेष्ठ संकल्प कर, उन संकल्पों द्वारा खुद का व घर का वातावरण बदल कर दिखाएं। वैसे भी इस मास को तपस्या मास कहा गया है। और यह उस महात्मा के लिए एक सच्ची श्रद्धाजंली होगी, संकल्पों की। क्यों न हम भी इस शक्ति का प्रयोग अद्भुत तरीके से करें।

जोधपुर-राज.। ऋषिकुल धाम ट्रस्ट के महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. शिव स्वरूपानंद सरस्वती जी को सेवाकेन्द्र में आने पर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शील।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। अलौकिक उद्घाटन समारोह कार्यक्रम में मंचासीन हैं राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. विमला दीदी तथा सभी का स्वागत करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन।